Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed And Refereed Journal)
Vol.3, Issue.IX, September 2024, Pc: PSR-2409012

वैशविक और राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

RAKHI SAXENA
Ph.D, Dept. Of Education, Bhagwant University, Ajmer

1. Abstract:-

हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत जन समूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है अगर कुछ चुनौतियों कि बात करे तो सबके लिए शिक्षा की सुविधा उपलब्ध करवाना है तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिये कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग प्रदान करे Eachone Teach One का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है | सबको शिक्षा मिले जिससे समाज परिवर्तन का प्रेरक बल बने | वही शिक्षक परिवाजक है |

"चलो जलाये दीप वहाँ जहाँ अभी भी अँधेरा है" |
शिक्षा पाकर भिक्षा माँगे युवजन खारो ठोकर आज
आजादी का स्वपन दिखाकर पांखडी
करते है राज भ्रष्ट व्यवस्था ने भी
डाला अब यहाँ डेरा है चलो जलाये
दीप वहाँ जहाँ अभी भी अँधेरा है |

2. Introduction:-

शिक्षा व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक,चारित्रिक,नैतिक तथा सांस्कृतिक विकास करता है | इसके द्वारा भौतिक समृप्द्त्ता भी संभव हो पाती है | शिक्षा के द्वारा ज्ञान में वृधि तथा प्रौधोगिक खोज को बढावा मिलता है | समाज परिवर्तन एवम गत्यात्मक है | सामाजिक सम्बन्धो में होने वाले परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तन कहते है | जो सामाजिक संगठन अर्थात समाज के ढ़ाचे और प्रकायो में घठित होते है | योगेन्द्र सिंह का मानना है कि आधुनिक शिक्षा का आधार वैज्ञानिक है जिसमें स्वंतत्रता समानता तथा मानवतावाद के तत्व सम्मिलित है |

3. Objective:-

1. शिक्षा में समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन की अभ्यासना |
2. शिक्षा और सामाजिक समस्याओ को जानना |

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन में एक उपकरण के रूप में कार्य करती है | शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान से लोगो के जीवन और विचार बदल जाते है | इस बदलाव के कारण समाज में परिवर्तन आवश्यक हो जाते है | शिक्षा लोगो को अधिक से अधिक रचनात्मक कार्यो में लगाये रखती है | वर्तमान शिक्षा पद्धति से

व्यक्तितव विकास और देश समाज को उन्नति लक्ष्य हासिल किया जा सकता है | आज हमे ऐसे पाठ्यक्रम की जरुरत है जो बच्चो में शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक सवेदनशीलता और समानता को विकसित करें |

4. Statement of Problem:-

नवीन विषय के रूप में समाज के उदव विकास एवम परिवर्तन की प्रस्त्भूमि में सामाजिक समस्या की अवधारणा ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है मानव समाज न तो कभी सामाजिक समस्याओ से पूर्ण मुक्त रहा है और न ही रहने की सम्भावना निकट भविष्य में नजर आती है परन्तु इतना निश्चित है कि आधुनिक समय में विधमान संचार की क्रांति तथा शिद्त्ता के प्रति लोगो की जागरूकता के फलस्वरूप मनुष्य इस समस्याओ के प्रति संवेदनशील एवं संजग हो गया है |

5. Hypothesis:-

- शिक्षा समाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है :-
- शिक्षा से शास्वत मूल्यों का पालन होता है |
- शिक्षा से समाजिक परिवर्तन का स्वागत करने की क्षमता बढती है |
- शिक्षा से संस्कृति का प्रसार होता है |
- शिक्षा से बाधाए दूर होती है |
- समाजिक परिवर्तन के दो स्त्रोत है याद्रछिक या आदितीय कारक |
- शिक्षा समाज का स्वरुप बदलकर उस पर नियंत्रण भी करती है अभिप्राय यह है कि व्यक्ति का जीवन एवं उसके क्रियाकलाप समाज को गतिशील रखते हैं | शिक्षा व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन कर उसके क्रियाकलापों में परिवर्तन कर समूह मन का निर्माण करती है और इससे अत्यव्व्यवस्था दूर कर उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करती है |
- समाज की रचना मनुष्य ने की है, और समाज का आधार मानव क्रिया है ये – अन्त: क्रिया सदैव चलती रहेगी और शिक्षा कि क्रिया के अंतर्गत होती है इसीलिए शिक्षा व्यवस्था जहां समाज से प्रभावित होती है वहीँ समाज को परिवर्तित भी करती है जैसे कि स्वंतत्रता के पश्चात सबके लिए शिक्षा एवं समानता के लिए शिक्षा हमारे मुख्य लक्ष्य रहे है इससे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ और समाज का पुराना ढाचा परिवर्तन होने लगा |

6. Research Methodology :-

विज्ञान का आधुनिक समाज पर विशेष प्रभाव है | अत: शिक्षा के द्वारा इस बात पर बल दिया जाता है कि व्यक्ति को चिन्तन तर्क तथा निर्णय आदि मानसिक शक्तियां पूरी तरह से विकसित हो जाए | वर्तमान समाज के विभिन्न रूप है | उदाहरण के लिए भारतीय समाज में पहले शिक्षा उच्च वर्ग के लिए सुरक्षित थी | अंग्रेजो के चंगुल से बाहर आकर शिक्षा और समाज के आदर्श तथा आवश्कताए परिस्थितियों के साथ बदल गई | आज शिक्षा भेद – भाव से ऊपर उठकर प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा लेने का अधिकार है |

7. Conclusion:-

शिक्षा और समाज में जो सम्बन्ध है वह परिवर्तन उसी के द्वारा है | शिक्षा का समाज और सांस्कृतिक संस्थाओ पर गहरा असर पड़ता है | यह गुणात्मक बदलावों से जुड़ा है जिन्हें मापा नहीं जा सकता है |

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा एस.के. 2006, "आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा", डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली |
2. प्रसाद गोविन्द 2007, "सामाजिक परिवर्तन" डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली |
3. शर्मा रामनाथ, शर्मा राजेन्द्र कुमार 2006, "शैक्षिक समाजशास्त्र", एटलांटिक पुबलिश्स एंड दिस्त्रिबुतेर्स, नई दिल्ली |
4. जैस्वाल सीताराम, 1964 "शैक्षिक समाजशास्त्र", मुद्रक नरेन्द्र भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी, हिंदी समिति, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ.
5. सिंह विजय बहादुर 2006, "आओं खोजे एक गुरु" श्रेया प्रकाशन 379 ए, शिवकुटी, इलाहाबाद |
6. पेडके प्रतिभा सुधीर 2006, "उद्योंमुख भारतीय समाजातील शिक्षण" मंगेश प्रकाशन |
7. शेटकर गणेश, 2002 "भारतीय शिक्षणाचा इतिहास" जोशी शोभना, ग्रन्म्थी प्रकाशन |

Poonam Shodh Rachna